Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कोकिला व्रत कथा ॥

॥ जय कोकिला देवी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कीर्तिमाला ने व्रत पूछा ॥

यह वसिष्ठ और कीर्तिमाला की प्रचलित कथा का स्वतंत्र संक्षिप्त रूपांतरण है। सती के कोयल रूप से जुड़ी दूसरी कथा भी कुछ क्षेत्रों में सुनाई जाती है।

एक बार युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से परिवार के सौहार्द से जुड़ा कोई व्रत बताने को कहा। श्रीकृष्ण ने मथुरा की रानी कीर्तिमाला का प्रसंग सुनाया। कीर्तिमाला ने कुलगुरु वसिष्ठ का आदर से स्वागत किया और उनसे ऐसा साधन पूछा जो गृहस्थ जीवन में स्नेह बनाए रखने की प्रेरणा दे।

वसिष्ठ ने आषाढ़ पूर्णिमा से जुड़े कोकिला व्रत का विधान समझाया। उन्होंने कहा कि इस तिथि को संकल्प लेकर देवी के कोकिला रूप का स्मरण किया जाता है। विस्तृत परंपरा में श्रावण तक नियमित स्नान, संयम और पूजा का क्रम भी आता है।

उन्होंने तिल से बनी कोयल की प्रतीकात्मक आकृति रखकर पुष्प, अक्षत, दीप और नैवेद्य अर्पित करने को कहा। कोयल का मधुर स्वर बोलचाल में कोमलता की याद दिलाता है। कीर्तिमाला ने ध्यान से यह विधि सुनी और अपने घर की सामर्थ्य के अनुसार पूजा का संकल्प लिया।

कथा में वसिष्ठ ने व्रत के समापन पर दान और कृतज्ञता का महत्व भी बताया। पूजा का उद्देश्य मन में श्रद्धा और संबंधों में सद्भाव जगाना था।

॥ कीर्तिमाला का पूजन और भाव ॥

पूर्णिमा पर कीर्तिमाला ने स्नान करके पूजा स्थान स्वच्छ किया। उन्होंने कोकिला के प्रतीक को सजाया, तिल और फूल अर्पित किए, दीप जलाया और गुरु से सुना हुआ व्रत विधान स्मरण किया। आगे के दिनों में वे अपनी क्षमता से नियमित पूजा करती रहीं।

व्रत की कथा में उनके परिवार में प्रेम और मंगल का वर्णन आता है। यह धार्मिक आस्था का वर्णन है, किसी व्यक्ति को विवाह, संतान या सुख का निश्चित परिणाम देने का वादा नहीं।

एक अन्य लोकमान्यता

कुछ क्षेत्रों में देवी सती के कोयल रूप की कथा कही जाती है। इसलिए कोकिला को देवी की स्मृति का प्रतीक मानकर पूजा की जाती है। दोनों कथारूपों की सामग्री और अवधि समान होना आवश्यक नहीं; घर की मान्य कथा का पाठ करें।

कथा की सीख

मधुर वाणी, संयम, श्रम और परिवार के लोगों का सम्मान इस प्रसंग से जोड़े जा सकते हैं। छोटी तिल की आकृति भी प्रतीकात्मक पूजा के लिए पर्याप्त है; सोने-चाँदी की वस्तु आवश्यक न मानें।

॥ जय माँ गौरी ॥